Chapter-7

सप्तम अध्याय

युगीन राष्ट्रीय चेतना तथा देश भक्ति से प्रेरित कृतियाँ

- भारत-भारती,
- वैतालिक,
- किसान,
- स्वदेश-संगीत,
- हिन्दू,
- विश्व-वेदना,
- अजित,
- भूमि- भाग,
- राजा- प्रजा,

अंतरंग विवेचन - कथावस्तु, वस्तुगत आधार, मौलिकता और आधुनिकता.

अभिव्यक्ति पक्ष- भाषा (मुहावरें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ), संवाद-योजना, रस-योजना, बिम्ब-विधान, अलंकार विधान, छन्द विधान.

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की मूल- भावना ही देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना है. यही वह मेरुदण्ड है, जिस पर कवि के काव्य- साहित्य का विशाल भवन टिका हुआ है. वस्तुतः गुप्तजी लोक-मानस में राष्ट्र प्रीति की भावना जगाने वाले सबसे शक्तिशाली कवि के रूप में हिन्दी-जगत में उभर कर आये हैं. वे सच्चे अर्थों में राष्ट्रकवि हैं. इस अध्याय में हम उनकी देश भक्ति एवं राष्ट्रीयचेतना से प्रेरित कृतियों का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं.

भारत-भारती

यह प्रबन्धात्मक मुक्तक काव्य अपने युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है. यह रचना मुसद्दसे हाली एवं मुसद्दसे कैफी को आधार मानकर लिखी गई है. मुसद्दसे हाली यवनों के लिए लिखी गई रचना है और " भारत-भारती " हिन्दुओं के लिए लिखी गई है. इसमें कवि ने देश की दुर्दशा का चित्रण किया है. गुप्तजी ने भारतवासियों के भूत एवं वर्तमान की विषमावस्था का वर्णन करते हुए नवजागरण की भावना उत्पन्न की है. इस रचना में कवि ने प्राचीन भारत के गौरव का, वर्तमान की अवनति का उल्लेख किया है. साथ ही भविष्य के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त की है.

वैतालिक -

" वैतालिक " एक लम्बा जागरण गीत है. इसका प्रणयन चिर सुषुप्त भारतीयों के उद्बोधनार्थ हुआ है. इसमें कवि ने पूर्व की आध्यात्मिक संस्कृति तथा पश्चिम की भौतिक संस्कृति के संयोग से राष्ट्रीय उत्थान के लिए नये मार्ग की ओर निर्देश किया है. कवि ने पश्चिम की प्रेय, ज्ञेय, गति और उन्नति से भारतीय श्रेय, ध्येय, पद्धति और मति को समन्वित करने का प्रयास किया है. इस काव्य में कवि की वैचारिकता और राष्ट्रभावना का विकास हुआ है. कवि ने भारतीय एवं पाश्चात्य सिद्धान्तों के आधार पर नवीन मानवता के विकास को प्रेरणा दी है. इस काव्य में कवि युग का वैतालिक बनकर युग-संदेश देने के लिए उपस्थित हुआ है.

किसान

" किसान " खण्डकाव्य में किसानों की तत्कालीन दारुण स्थिति का चित्रण हुआ है. इसमें कवि ने कल्लू एवं कुलवती की जीवन-कथा के द्वारा कृषक- वर्गके जीवन का, एवं उनकी दुर्दशा का वर्णन किया है. स्वस्थ एवं सशक्त किसान को पुलीस, जमींदार, महाजन, अनावृष्टि और महामारी का शिकार होना पड़ा. बादमें, वह आरकाटियों के चंगुल में फँस गया. उसे कुली बनाकर फिजी भेज दिया गया. वहाँ गर्भिणी कुलवती अपने सतीत्व की रक्षा करते हुए मर गई. कुली प्रथा बंद हो जाने से कल्लू भारत आया और सेना में भर्ती हो गया. अंतमें, उसने टिगरिस तट पर वीरगति पाई.

स्वदेश-संगीत

यह राष्ट्रीय प्रगीतों का संकलन है. इस काव्य की रचनाएँ दो भागों में विभक्त हैं. पहली गांधीजी के राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के पूर्व की है. और दूसरी उनके नेतृत्व काल में लिखी गई रचनाएँ हैं. संक्षेपमें, यही कहा जा सकता है कि इसमें राष्ट्रीय जागृति एवं स्वातंत्र्य चेष्टा दोनों की व्यजंना हुई है.

हिन्दू

गुप्तजी ने इस विराखयातक बृहत् काव्य में भारत के अतीत का गान किया है, वर्तमान की विषमताओं से परिचित कराया और मंगल भविष्य की कामना की है. कवि ने एक ओर जातीयता की घोषणा की, तो दूसरी ओर अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना का वर्णन किया है. उन्होंने हिन्दुओं की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया है. कवि हिन्दू धर्म को सब धर्मों का मूल, भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृतियों में गौरवपूर्ण मानते हैं, बादमें, कवि ने हिन्दुत्व की अवनति के कारणों का उल्लेख किया है. इसकाव्य में सामाजिक, धार्मिक, वर्ण-व्यवस्था और नारी- संबंधी अनेक सुधारों का

समर्थन किया है. उन्होंने चरित्र परिष्कार की महत्ता को महत्व दिया है एवं संकीर्ण मनोवृत्ति, फूट, कलह आदि का विरोध किया है. वे चाहते हैं कि गाँवों का, कृषि का, मन्दिरों का तथा साधुओं का सुधार होना चाहिए. रुढ़ि-रीति, खान- पान, छूत- छात, विधवा- विवाह, स्त्री- शिक्षा, धर्म- परिवर्तन आदि में उनकी दृष्टि सुधारवादी रही है. इसमें गुप्तजी ने हिन्दू समाज के सभी अंगों, पक्षों तथा समस्याओं का वर्णन किया है.

विश्व- वेदना

इस प्रबंधात्मक मुक्तक काव्य में कवि ने संसार-व्यापी युद्ध के दाहों से व्यथित विश्व की वेदना का वर्णन किया है. इसमें युद्ध की विभीषिकाओं का तथा उसके दुष्परिणामों का वर्णन किया गया है. कवि को इस बात का दुःख है कि आज निर्माण के स्थान पर नाश हो रहा है. यहाँ कवि विश्व की वेदना से कराह उठा है. इस काव्य में जगत व्यापी युद्धों से उत्पन्न होनेवाली भयंकर व्यथा का वर्णन किया गया है.

इस रचना का आरंभ प्रथम विश्वयुद्ध के बाद हुआ है और अंत द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ जाने की आशंका से. इन दो समयों की रचना को कवि ने एकरुपता प्रदान की है. कवि ने विश्व युद्ध की विगर्हणा की है. आर्थिक शोषण, राष्ट्रों की स्वार्थांधता, यांत्रिक समुन्नति के नाम पर किये गये मानव-प्रगति के अवरोध, हत्या, रक्त-पात आदि का वर्णन किया है. उन्होंने मानवता के विकास को महत्व दिया है और मानवता के पतन पर क्षोभ प्रदर्शित किया है.

अजित

" अजित " पन्द्रह परिच्छेदों में लिखा गया वर्णनात्मक खण्डकाव्य है. इस आदर्शवादी काव्य में कवि ने सद् एवं असद् प्रवृत्तियों का वर्णन किया है. अजित कृषक पुत्र है. वह विवाहित है. गाँव का जमींदार अजित

के पिता का खेत हथियाना चाहता था. इसीलिए उसे एक वर्ष का कारा-वास दिया गया. वह जेल में अनेक बन्दियों के संपर्क में आता है. बादमें, उसके पिता ने जमींदार को खेत भेंट कर दिया. जिससे अजित को मुक्त किया गया. जब वह आया तब तक उसके पिता मर चुके थे. पहले अजित क्रांतिकारी बन गया था लेकिन वही बादमें गांधीवादी बन गया. " अजित" की कथा सुखांत है.

भूमि-भाग

" भूमि-भाग " भूदान- विषयक इक्कीस प्रगीतों का संकलन है. कवि ने भूदान- यज्ञ की अहिंसक क्रान्ति में विश्वास व्यक्त किया है. उन्होंने भूमि के सम्यक् वितरण का समर्थन किया है. उनकी दृष्टि मानवता-वादी है. कवि ने कई प्रगीतों में भूमि हीनों की समस्या को हल करने का प्रयत्न किया है. भूमि-हीनों की करुण स्थिति की अभिव्यक्ति " एक खेत ", " चढ़ौती " तथा भू- भ्रष्ट " जैसे प्रगीतों में हुई है. कुछ में कवि ने यह श्रद्धा प्रकट की है कि भूमि पर सबका समान अधिकार होना चाहिए. कई प्रगीत वन्दनात्मक है और कई आशंसात्मक . कई प्रगीतों में भूमि- दान की आवश्यकता का महत्व प्रतिपादित किया गया है. " विजय-दशमी " में कवि ने कामना को नहीं, बल्कि कर्मण्यता की भावना को महत्व दिया है.

राजा-प्रजा

यह प्रबन्धात्मक मुक्तक काव्य " राजा " और " प्रजा " दो खंडों में विभक्त है. राजा के राज्य का भारतीय प्रजातंत्र में विलीनीकरण हो गया है और नवीन लोकतंत्र की स्थापना हो गई है. इसके बाद कवि ने राजा की मानसिक प्रतिक्रिया का वर्णन किया है. " राजा " में राजा ने प्रजा को संबोधित करते हुए प्रजातन्त्र के समर्थकों को उसके दोषों से अवगत कराया है एवं बादमें चेतावनी भी दी है. इसका उत्तर " प्रजा "

खण्ड में प्रजा ने दिया है. उसने राजतन्त्र के स्थान पर प्रजातन्त्र के गुणों का वर्णन किया है. और राजा को प्रजा में मिल जाने के लिए कहा है. राजा का यह संदेश है कि तुम संयम में रहो तभी बड़े से बड़े लोककल्याण के कार्य हो सकेंगे. प्रजा ने भी कहा कि मनुष्यत्व से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है. पुरुषार्थ और कर्म से पृथ्वीपर स्वर्ग की रचना हो सकती है. कवि ने सत्याग्रही एवं अहिंसक मानवता की अनासक्ति-परक व्याख्या की है. साथ ही गुप्तजी ने विश्व-बन्धुत्व की प्रेरणा की है.

वस्तुगत आधार
==========

भारत-भारती

" भारत-भारती " मुसद्दसे हाली " और " मुसद्दसे कैफी " पर आधारित रचना है. गुप्तजी ने स्वयं लिखा है- " हाली और कैफी के मुसद्दसों से भी मैंने लाभ उठाया है, इसलिए उनके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ. " [1] श्रीमान राजा रामपालसिंहजी ने कवि को मौलानाहाली के मुसद्दस के आधार पर हिन्दुओं के लिए एक कविता लिखने का अनुरोध किया था. जिसके फलस्वरुप, गुप्तजी ने " भारती-भारती " की रचना की. इसके अलावा कवि ने पूज्यवर श्रीमान पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदीजी एवं माननीय श्रीयुत " बार्हस्पत्य " महोदय के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट की है. " भारत- भारती " की रचना के लिए हाली का मुसद्दस नमूना और प्रेरक काव्य सिद्ध हुआ और " भारतदर्पण " ने उसकी आधार-भूमि का निर्माण किया. उपशीर्षकादि की योजना हाली ने की है, पर कैफी ने पादटिप्पणियाँ भी दी हैं. गुप्तजी ने कैफी के उपशीर्षकों और पाद- टिप्पणियों को स्वीकार किया है. " भारत-दर्पण " के इकहत्तर उप-शीर्षकों में से अधिकांश " भारत-भारती " ने रखे गए हैं और कई नए उपशीर्षक भी दिए गए हैं. कवि ने अपने विषय की सामग्री को " भारत- दर्पण " में एकत्रित पाया, जिसका भरपूर उपयोग किया. " [2]

---

1. भारत- भारती, पृ. 5
2. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य - कमलाकान्त पाठक, पृ. 277

इस प्रकार गुप्तजी इन लेखकों से प्रभावित अवश्य हुए हैं. किन्तु यह रचना तत्कालीन राजनैतिक और राष्ट्रीय परिस्थितियों से भी काफी प्रभावित है. इस रचना पर विदेशी बहिष्कार तथा स्वदेशी आन्दोलनों का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है. बंग-भंग के बाद देश में एक नवीन क्रांति की लहर आई एवं कांग्रेस ने विदेशी माल का बहिष्कार किया, तथा देशी उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन दिया. संक्षेप में " स्वदेशी आन्दोलनों से राष्ट्र की चेतना जाग्रत हुई. भारतीय उद्योग-धंधों के विकास में भी इन आन्दोलनों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है.

वैतालिक

" वैतालिक " सामयिक परिस्थितियों से प्रभावित रचना है. भारतवासियों की सामाजिक जड़ता में परिवर्तन के लिए इस समय अनेक प्रयत्न किये गये. पुनरुत्थान एवं अभ्युत्थान की नयी चेतना से नये सामाजिक मूल्यों का जन्म हुआ. जिससे सामाजिक जीवन की मान्यताएँ खण्ड- 2 होकर टूटने लग गईं. आलस्य, दंभ, फूट, व्यभिचार, विलास, दुराचार आदि का त्याग करने के लिए लोग प्रवृत्त हुए. राजनीतिक क्षेत्र में कर्मण्यता की प्रधानता थी उसको सामाजिक जीवन में भी अपनाया गया. नारियों में जागृति आई. वे भी शिक्षा प्राप्त करने लगीं. उन्होंने राजनीतिक क्षेत्रों में भाग लेना शुरु किया. वे स्वदेशी तथा सत्याग्रह आन्दोलनों में भाग लेने लगीं. इस प्रकार नारी जीवन में परिवर्तन आया. उनमें भी समानता की भावना पैदा हुई. आर्यसमाज की संस्थाओं ने भारतीयों को कूप- मण्डूकता का त्याग करने के लिए उपदेश दिया. बादमें, अनेक भारतीय उच्च शिक्षा के लिए विदेश गये. अछूतोद्धार, एवं नारी स्वतंत्रता आदि के लिए आन्दोलन भी हुए. इन आन्दोलनों का कारण समानता की भावना थी.

किसान

" किसान " की रचना सन् 1915 ई० में हुई और उसका प्रकाशन सन् 1917 में हुआ. सन् 1915 में फीजी की गिरमिट प्रथा का अंत हुआ.

इसका उल्लेख गुप्तजी ने " किसान " में किया है. गयाप्रसाद सनेही के " कृषक क्रन्दन " और सियारामशरण गुप्त के " अनाथ " में भी कृषकों की दुर्दशा का चित्रण हुआ है. स्पष्ट है कि कवि ने उस समय की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थिति से आधार ग्रहण किया है.

जिस समय इस कृति की रचना हुई उस समय किसानों की स्थिति दयनीय थी. इसकाल के कवि लोग किसानों के दुःखपूर्ण जीवन से परिचित थे एवं जीवन से ऊपर उठाने के लिए अनेक प्रकार की काव्य रचनाएँ करते थे. गुप्तजी ने भी इसी समाज सुधारक दृष्टिकोण से " किसान " की रचना की है. 1913 में गिरमिट कानून का विरोध किया गया. तथा इस प्रथा को नष्ट करने का प्रस्ताव रखा गया. बादमें, यह प्रथा तोड़ दी गई. 1915 में गांधीजी अफ्रीका से भारत लौटे. प्रथम तो वे काग्रेस से अलग रहे लेकिन बादमें उन्होंने सत्याग्रह करें ~~अधिवेशन~~ के द्वारा कड़े कानून तोड़ें. सन 1911 में काग्रेस का 21 वां अधिवेशन हुआ. इसमें रजिस्ट्रेशन और गिरमिट संबंधी एशिया विरोधी कानूनों को रद्द कराने पर गांधीजी को धन्यवाद दिया गया. सन 1915 में दीनबन्धु एन्डरूज और मि० पियरसन फिजी गये और वहाँ के समाचारों को रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित किया. इस रिपोर्ट के बाद पं० मदन मोहन मालवीय ने कुली-प्रथा को उठाने का प्रस्ताव रखा. जिसे लार्ड हार्डिंग ने स्वीकार कर लिया. " लार्ड चेम्सफोर्ड ने 12 अप्रैल 1917 को कहा कि भारत रक्षा- विधान के अंतर्गत युद्ध कालीन कार्रवाई के रूप में मजदूरों की भरती बंद की जाती है. " [1] किसानों की दुर्दशा, फीजी की कुली-प्रथा आदि तत्कालीन राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति " किसान - में हुई है.

स्वदेश- संगीत

इसमें कवि की प्रायः बारह वर्षों की स्वदेश विषयक गीति-रचना प्रस्तुत हुई है. देश की तत्कालीन राजनीतिक-राष्ट्रीय परिस्थितियों से ही

---

1. काग्रेस का इतिहास- प्रथम खण्ड- पट्टाभिसीतारामैया, पृ. 155

कवि को इन गीतों की प्रेरणा प्राप्त हुई. सन 1913 में नवाब सय्यद मुहम्मद बहादुर कराँची कांग्रेस के सभापति थे. उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को कन्धे से कन्धा लगाकर काम करने के लिए कहा. सन 1915 से गांधीजी सत्य के प्रयोग करते रहे. उन्होंने चम्पारन, खेड़ा, बोरसद, बारडोली और सारे भारत में सत्याग्रह का नेतृत्व किया. सन 1920 से असहयोग आंदोलन आरंभ हुआ. असहयोग के लिए सरकारी उपाधियों, अवैतनिक पदों का त्याग किया गया. विद्यार्थीओं ने स्कूल व कालेजों का त्याग किया. विदेशी माल का बहिष्कार किया गया. संक्षेप में तत्कालीन राष्ट्रीय भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति ही इस कृति के गीतों में हुई है.

हिन्दू

सन 1920 ई० के नागपुर अधिवेशन में महात्मा गांधी को असहयोग प्रस्ताव के लिए स्वकृति दी गई. दास, पाल आदि इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए और उन्होंने कांग्रेस को त्याग दिया. तथा वे उदारवादियों में सम्मिलित हो गए. नागपुर अधिवेशन के असहयोग प्रस्ताव में सरकारी उपाधियाँ, स्कूल, कालेज, विदेशी वस्त्र, कचहरी, फौज तथा दफ्तरों की नौकरियाँ छोड़ने की योजना बनाई गई थी. गांधीजी के आह्वान पर जनता ने इनका त्याग किया. इसप्रकार इस आंदोलन को सफलता प्राप्त हुई. सन 1921 में बम्बई में हिन्दू-मुसलमानों के बीच दंगा हुआ, खून की धारा बह चली तब गांधीजी ने अनशन किया. जब चौरीचौरा काण्ड हुआ तब इस आंदोलन को समाप्त कर देना पड़ा. 1922 ई० में साम्प्रदायिक दंगों तथा अहिंसात्मक कार्यों से हिन्दू-मुस्लिम एकता कमजोर हो गई. खिलाफत और असहयोग दोनों समाप्त हो गये. असहयोग, खिलाफत, सविनय आंदोलनों की असफलता से देश निराशा की भावना को स्वराजियों की क्रियाशीलता ने मिटा दी. 1923-24 में दिल्ली, लखनऊ, नागपुर, गुलबर्ग, जबलपुर, इलाहाबाद, शाहजहांपुर में साम्प्रदायिक दंगे हुए. तब गांधीजी ने इक्कीस

दिन के उपवास किये. सन 1925 में भी भयंकर दंगे हुए. " कवि साम्प्रदायिक दंगों के कारण व्याकुल हो उठा और उसने " हिन्दू " की रचना की. निश्चय ही उसने जातीय भावना की संकीर्णता कहीं नहीं दिखाई, वरन राष्ट्रहित को ही प्रमुख रखा. राष्ट्र की वैचारिक प्रगति जातीयता को मध्ययुगीन वस्तु समझने लगी थी और इस समस्या का राष्ट्रवादी तथा मानवतावादी हल ही उसे अभीष्ट था. " [1] भारत में उत्तरदायी शासन लागू करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए साइमन कमीशन की नियुक्ति की गई. यह स्मरणीय है कि 1927 ई० की मद्रास कांग्रेस ने अपना ध्येय औपनिवेशिक स्वराज्य के स्थान पर पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता घोषित किया. " [2] बादमें, इस कमीशन का बहिष्कार किया गया. 1928 में सर्वदल सम्मेलन का आहवान किया गया. इस सम्मेलन ने देश की एकता को नवीन रुप में उपस्थित करने का कार्य किया और फिरसे असहयोग आन्दोलन आरंभ हुआ.

विश्व-वेदना

" विश्व-वेदना " में कवि ने प्रथम विश्व महायुद्ध की भीषणता का वर्णन किया है. यद्यपि इस युद्ध से भारत का प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं था लेकिन उस समय ब्रिटिश शासित होने के कारण भारत को युद्ध में भाग लेना पड़ा. इसी वर्ष श्रीमती एनी बीसेण्ट ने लन्दन में होमरुल लीग की स्थापना की. वे भारतीय जागरण के संदेशवाहक के रुप में कार्य करना चाहती थी. इस " विश्वयुद्ध ने विश्व भर के लोगों का हृदय तथा मस्तिष्क जनतंत्र के नये दृष्टिकोण के प्रति खोल दिया था. " [3]

सितम्बर, 1939 ई० में द्वितीय विश्व महायुद्ध का आरंभ हुआ. युद्ध के आरंभ से यह जाहिर हो गया था कि यह युद्ध प्रथम विश्वयुद्ध से काफी

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य- कमलाकांत पाठक, पृ.182
2. आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास- डा० जितराम पाठक, पृ. 173
3. वही, पृ. 112

भिन्न होगा. यह युद्ध मनुष्यों का न होकर मशीनों का था. इससे जन-हानि कम होने की आशंका थी लेकिन विनाशक बम वर्षा से सम्पत्ति की हानि अधिक होने की संभावना थी. जब इस युद्ध का आरंभ हुआ तब भारत के ग्यारह प्रान्तों में स्वायत्त शासन था. भारत के गवर्नर जनरल ने इनकी सम्पत्ति लिये बिना ही भारत को युद्ध में घसीट लिया था. कांग्रेस कार्य समिति ने युद्ध में सम्मिलित होना इस शर्त पर स्वीकार किया कि युद्ध के बाद भारत को जनतांत्रिक राज्य के रुप में घोषित किया जाय.

अजित

ब्रिटिश सरकार भारतीय जनता को सुविधाएँ देकर भारत में शासन करना चाहती थी. लेकिन भारतीय नेता ब्रिटिश साम्राज्यवाद की परिस्थितियों से परिचित थे. कांग्रेसी नेता मजदूर आंदोलन के विरोधी थे. इसका कारण यह था कि मजदूर वर्ग की यह क्रान्ति सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यवाद को ही नहीं बल्कि भारतीय पूँजीवाद वर्ग को भी नष्ट कर सकती है. इसलिये उन्होंने क्रान्ति या मजदूर आंदोलन को प्रश्रय नहीं दिया. कांग्रेस इसके विरुद्ध थी फिरभी मजदूरों का संघर्ष तीव्रतर होता गया. उस समय मजदूर, पुलिस, सेना सभी असंतुष्ट थे. संक्षेप में साम्राज्य एवं पूँजीवाद विरोधी आंदोलन होने लगे. गांधीजी ने 1942 की क्रान्ति को, नाविकों के विद्रोह को तथा भारतीय राष्ट्रीय सेना ने गांधीजी के अहिंसावाद को चुनौती दी. इन घटनाओं ने साम्राज्यवादी रुप को ब्रिटेन के सामने रक्खा. अब ब्रिटेन को भारत की स्वतंत्रता के संबंध में सोचने के लिए विवश होना पड़ा. कांग्रेसी नेता समझौते से स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे. वे क्रान्तिकारी घटनाओं का स्वीकार नहीं करते थे. इस युग में वामपंथियों ने प्रकट विरोध किया. जिससे साम्राज्यवाद की जड़ें हिल गईं.

इस समय साम्राज्यवाद को चुनौती दी गई. साम्राज्यवाद के विरोध में मजदूर और कृषक आन्दोलन ने संघर्ष किया. मजदूरों के आंदोलन

का उद्देश्य पूँजीवाद का विरोध था. लेकिन भारत में पूँजीवाद ही साम्राज्यवाद का मुख्य रूप था. साम्राज्यवाद ने वर्ग-चेतना की व्यापकता को देखकर खतरे का अनुभव किया.

इस काल की राष्ट्रीयता मानवतावादी है. मार्क्सवाद तथा समाजवाद का प्रचार हुआ. उन्होंने शोषण का विरोध किया. इस तरह उसने मानवतावाद का आधार लिया किन्तु क्रान्ति की राह अपनायी. इस रचना में गुप्तजी का दृष्टिकोण क्रांतिवादी होकर भी गांधीवादी रहा है.

भूमि- भाग

विनोबा भावे ने सन 1951 ई० में भूदान आंदोलन का आरंभ किया. इस योजना में विनोबाजी जमीनवालों से जमीन लेकर भूमि-हीनों को जमीन देते थे. इस कार्य में विनोबाजी को काफी सफलता मिली है. गुप्तजी ने विनोबाजी के इस कार्य को आधार मानकर " भूमि- भाग " की रचना की है.

राजा-प्रजा

यह रचना तत्कालीन युगीन चेतना के आधार पर लिखी गई है. भारत जब स्वतंत्र हुआ तब अनेक देशी रियासतें थीं. सरदार पटेल ने देशी राजाओं का तथा उनकी प्रजा का विश्वास प्राप्त किया. और उन्होंने सभी रियासतों को भारत में मिला दिया. 1956 में भारत को संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य के रूप में घोषित किया गया. तब से संविधान के अनुसार ही भारत का शासन- सूत्र चल रहा है. 1955 ई० में बालिग मताधिकार के आधार पर भारत में सबसे पहला चुनाव हुआ. उसमें कांग्रेस के सदस्य बहुमत से आये. अर्थात्, कांग्रेस को सफलता मिली. भारत तथा चीन के प्रधान मंत्रियों ने जून 1954 ई० में शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए पंचशील के सिद्धान्तों को अपनाया. इन सिद्धान्तों का प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा और वे भी शांति के लिए

प्रयत्न करने लगे. इन पंचशील के सिद्धान्तों का उल्लेख गुप्तजी ने अपने काव्य में किया है ।

~~आधुनिकता एवं~~ मौलिकता और आधुनिकता

भारत-भारती

" भारत-भारती " के कवि ने " मुसद्दसे हाली " और " मुसद्दसे कैफी " से आधार लिया है. फिरभी इसमें अनेक मौलिक उद्-भावनाएँ की हैं. " भारत-भारती " और " मुसद्दसे होली " की विषय-वस्तु भिन्न है. " भारत-भारती " हिन्दू जाति के लिए लिखी गई है जबकि हाली का लक्ष्य यवन प्रजा रही है. कहीं कहीं इसमें हाली के मुसद्दस की ध्वनि सुनाई पड़ती है-

" मुसद्दस हाली " में हाली कहते हैं ---

" कि कल कौन थे आज क्या हो गए तुम,
अभी जागते थे, अभी सो गए तुम । " [1]

गुप्तजी ने भी " भारत-भारती " में " हम क्या थे " और " क्या हो गए " का वर्णन करते हुए " क्या होंगे " का विवरण भी दिया है. "[2]

" पै मैलों की रौनक हैं जाकर बढ़ाते पड़े फिरते हैं देखते और दिखाते
मगर नाच गाने में हैं सबसे आगे " [3]

इसकी प्रतिध्वनि -" भारत-भारती " में सुनाई पड़ती है.

" रहती उन्हीं के ठाठ की है धूम मेलों में सदा,
आगे मिलेंगे वे थियेटर और खेलों में सदा । " [4]

---

1. मुसद्दसे हाली, पहला दिबाचा तथा मुसद्दस, पृ. 14
2. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य- कमलाकांत पाठक, पृ. 277
3. मुसद्दसे हाली, सदी एडीशन- पृ. 78
4. भारत-भारती, पृ. 121

" मुसद्दसे हाली " में कवि कहते हैं--

" परेशा अगर कहत से इक जहाँ है तो बेफ़िक्र हैं क्योंकि घर में समा है । " [1]

तब गुप्तजी कहते हैं --

" दुर्भिक्ष आदिक दुःख से यदि देश जाता है भरा,
तो हैं प्रसन्न कि धाम उनका अन्न-धन से है भरा । " [2]

इस प्रकार गुप्तजी ने भाव ग्रहण किया है. लेकिन उनकी शैली स्वतंत्र है. " भारत-भारती " के कवि कहते हैं--

" हाँ लेखनी, हृत्पत्र पर लिखनी तुझे है यह कथा,
दृक्कालिका में डूब कर तैयार होकर सर्वथा ।
स्वच्छन्दता से कर तुझे करने पड़े प्रस्ताव जो,
जग जायँ तेरी नोंक से सोये हुए हों भाव जो । " [3]

इससे स्पष्ट है कि दोनों रचनाओं में साम्य हैं. किन्तु गुप्तजी की रचना मुसद्दसे कैफी की रचना से उत्कृष्ट है.

पं० ब्रजमोहन दत्तात्रेय कैफी " भारत-दर्पण " अथवा " मुसद्दसे कैफी " में कहते हैं--

" मुनासिब है सर फूट का पहले फोड़ो
और आपस में रिश्ता अखव्वत का जोड़ो
यह बंधन जो हैं जाहिरी इनको तोड़ो
फिर इन इख़्तलाफ़ों की गरदन मरोड़ो । " [4]

" भारत-भारती " में कहा गया है -

----

1. मुसद्दसे हाली, सदी एडीशन, पृ. 55
2. भारत-भारती, पृ. 118
3. वही, पृ. 7
4. मुसद्दसे हाली- पं० ब्रजमोहन दत्तात्रेय कैफी, पृ. 48

" विषपूर्ण ईर्ष्या-द्वेष पहले शीघ्रता से छोड़ दो,
घर फूँकनेवाली फुटैली फुट का सिर फोड़ दो ।
मालिन्य से मुँह मोड़कर मद-मोह के पद तोड़ दो,
टूटे हुए वे प्रेम-बंधन फिर परस्पर जोड़ दो । " [1]

मुसद्दसे कैफी ने लिखा है--

" गये थे बड़े नाज़ोंसे मत से पाले
रखे इन पै थे नौकरों के रसाले
हुए जब के नामे खुदा होश वाले
तो फिर पेट से पांव ऐसे निकाले
के अब घर में मुश्किल इन्हें थामना है
नए फितनों का आए दिन सामना है । " [2]

इस भाव को गुप्तजी ने इस प्रकार प्रदर्शित किया है --

" यों तो सभी का बीतता है बाल्यकाल विनोद में,
वे किन्तु सोते-जागते रहते सदा हैं गोद में ।
इस भांति पल कर प्यार में जब वे सपूत बड़े हुए,
उत्पात उनके साथ ही घर में अनेक खड़े हुए । " [3]

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि गुप्तजी की रचना कैफी की रचना से श्रेष्ठ है.

गांधी विचारधारा का प्रभाव

मैथिलीशरण गुप्त गांधीजी की तरह विदेशी वेश- भूषा के विरोधी हैं. वे " भारत- भारती " में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए

---

1. भारत-भारती, पृ. 162
2. मुसद्दसे कैफी- प्रो० ब्रजमोहन दत्तात्रेय कैफी- पृ. 48
3. भारत-भारती, पृ. 120

और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने के लिए कहते है.

" केवल विदेशी वस्तु ही क्यों अब स्वदेशी है कहाँ ?
वह वेष-भूषा और भाषा, सब विदेशी है यहाँ ।
गुण मात्र छोड़ विदेशियों के हम उन्हीं में सन गये,
कैसी नकल की वाह ! हम नक्काल पूरे बन गये । " [1]

गांधीजी के मतानुसार हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बननी चाहिए, अंग्रेजी नहीं. गुप्तजी ने भी " भारत-भारती " में इस विचार को प्रकट किया है --

" है राष्ट्रभाषा भी अभी तक देश में कोई नहीं,
हम निज विचार जना सकें जिससे परस्पर सब कहीं ।
इस योग्य हिन्दी है तदपि अब तक निज पद पा सकी,
भाषा बिना भावैकता अब तक न हममें आ सकी ।। " [2]

गुप्तजी भारत भारती में देशवासियों को निवेदन करते हैं--

" भगवान जानें देश में कब आयगी अब एकता,
हठ छोड़ दो हे भाइयों ! अच्छी नहीं अविवेकता ।। "[3]

गांधीजी की शिक्षा का आदर्श मनुष्य को मनुष्य बनाना है, सच्चा नागरिक तैयार करना है. गुप्तजी ने भी " भारत-भारती " में इस विषय पर अपने विचार प्रकट किये है --

" हा ! आज शिक्षा मार्ग भी संकीर्ण होकर क्लिष्ट है,
कुलपति सहित उन गुरुकुलों का ध्यान ही अवशिष्ट है ।
बिकने लगी विद्या यहाँ अब, शक्ति हो तो क्रय करो,
यदि शुल्क आदि न दे सको तो मूर्ख रहकर ही मरो । " [4]

---

1. भारत-भारती, पृ. 109
2. वही, पृ. 181
3. वही, पृ. 181
4. वही, पृ. 122

" अब नौकरी ही के लिए विद्या पढ़ी जाती यहाँ,
बी० ए० न हों हम तो भला डिप्टीगरी रक्खी कहाँ ?
किस स्वर्ग का सोपान है तू हाकरी, डिप्टीगरी !
सीमा समुन्नति की हमारी चित्त में तू ही भरी ।
शिक्षार्थ छात्र विदेश भी जाते अवश्य कभी कभी,
पर वकृता ही झाड़ते है लौटकर प्राय: सभी ।
है काम कितनों का यही पहले यहाँ मिस्टर बने,
इंग्लैण्ड जाकर फिर वहाँ वाग्वीर बारिस्टर बने ।। " [1]

वैतालिक

इसमें भारतीयों को अपनी संस्कृति के साथ पाश्चात्य संस्कृति का सामंजस्य स्थापित करने के लिए कहा गया है. अर्थात्, इस रचना के माध्यम से गुप्तजी ने भारतीयों को जागरण की प्रेरणा प्रदान की है. इस रचना के मुखपृष्ठ पर ही कहा गया है--

" फिर अपने को याद करो,
उठो अलौकिक भाव भरो । " [2]

इस रचना का नाम वैतालिक भी स्पष्ट है. वैतालिक लोग स्तुति पाठ करते हैं और राजाओं को उद्बोधित करते हैं. वैसे ही " वैतालिक " में भी सुषुप्त भारतीयों को जाग्रत होने के लिए कहा गया है. यहाँ कवि वैतालिक के रुप में ही उपस्थित हुए हैं.

इससे कवि ने पूर्व की आध्यात्मिक संस्कृति तथा पश्चिम की भौतिक संस्कृति के संयोग से नए मार्ग का निर्देश किया है. उनका उद्देश्य पश्चिम के प्रेय, ज्ञेय, गति और भारतीय श्रेय, ध्येय, पद्धति का समन्वय करना रहा है. इस कृति की वैचारिकता और राष्ट्र भावना विकसित हुई है.

1. भारत-भारती, पृ. 123

2. वैतालिक, मुखपृष्ठ

किसान

मैथिलीशरण गुप्त ने " किसान " में किसानों की दारुण दशा का चित्रण किया है. किसानों पर जमींदारों द्वारा, पुलिस द्वारा, जमींदारों के कारिन्दों द्वारा क्या क्या गुजरता है ? इसका मार्मिक वर्णन कवि ने किया है. एक किसान दुःखी होकर ईश्वर से पुछता है -

" कृषक-वंश को छोड़ न था क्या और ठिकाना ?
नरक- योग्य भी नाथ ! न तुमने हमको माना । "
× × ×
कृषि ही थी तो विभो ! बैल ही हमको करते,
करके दिन भर काम शाम को चारा चरते ।
कुत्ते भी है किसी भाँति दग्धोदर भरते,
करके अन्नोत्पन्न हमीं हैं भूखों मरते । " [1]

एक स्थान पर गुप्तजी ने कृषकों की विशेषता को दर्शाते हुए उनकी करुण पुकार को मार्मिक शब्दों द्वारा व्यक्त किया है. प्रतिदिन की बाँधाओं के कारण जीवन से विमुख हुए किसान मृत्यु को सहर्ष आलिंगन करने को प्रस्तुत बैठे हैं. उनकी रामकहानी उन्हीं की जबानी सुनवाकर कवि मार्मिक वर्णन करने में सफल हुआ है--

" बनता है दिन-रात हमारा रुधिर पसीना,
जाता है सर्वस्व सूद में फिर भी छीना ।
हा हा खाना और सर्वदा आँसू पीना,
नहीं चाहिए नाथ ! हमें अब ऐसा जीना । " [2]

गांधीजी ऊँच-नीच के भेदभाव में नहीं मानते है. वे मानते हैं कि अछूतों के प्रति हिन्दू जनता ने जो अन्याय किया, वह बड़ा भारी कलंक है. गांधीजी का हृदय समाज के इस दलित- पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूतिशील रहा है. गुप्तजी ने भी " किसान " में इस कृषक वर्ग का मार्मिक चित्रण किया है.

1. किसान, पृ. 6
2. वही, पृ. 9

स्वदेश-संगीत

गांधीजी के असहयोग आन्दोलनों का प्रभावभारतीय जनता पर ही नहीं बल्कि ब्रिटिश सरकार पर भी पड़ा. उनके एक संकेत मात्र से ही ब्रिटिश सरकार कांपने लगी थी. गांधीजी के इस प्रभाव का वर्णन गुप्तजी ने इन शब्दों में किया है --

" अस्थिर किया टोपे वालों को गांधी टोपी वालोंने,
शस्त्र बिना संग्राम किया है इन माई के लालोंने,
अपने निश्चय पर दृढ़ है, मारो, पीटो बन्द करो,
अजब बांकपन दिखलाया है, इनकी सीधी चालों ने,
यहाँ जमाई हैं, अपनी जड़ पश्चिम के जिन पौधोंने,
असहयोग के फल उपजायें उनकी ऊँची डालोंने,
क्या कर लिया मशीन गनों ने, संगीनों ने भालोंने ?
गोलों को भी उड़ा दिया है, यहाँ रुई के गोलोंने । "[1]

हिन्दू

गुप्तजी की विचारधारा पर गांधीवाद का प्रभाव पड़ा है. " गांधीयुग का समारंभ राष्ट्रीय-जागरण के इतिहास में एक मोड़ उपस्थित करता है और उससे संपृक्त होने पर गुप्तजी की जीवन दृष्टि का भी विस्तार तथा उन्नयन होता है. साम्प्रदायिक विद्वेष से क्षुब्ध होकर उन्होंने " हिन्दू " की रचना की ‡ "[2] " हिन्दू " पर सविनय अवज्ञा आंदोलन और असहयोग का प्रभाव दिखाई देता है. सन 1922 में सत्याग्रह स्थगित हो जाता है. हिन्दू मुस्लिमों में तीव्र कटुता पैदा होती है. इसका परिणाम यह आया कि सांप्रदायिक वैमनस्य बढ़ने लगा. गुप्तजी भी गांधीजी की भाँति संकुचित विचारों का त्याग करने के लिए कहते हैं. उनकी मान्यता है कि अछूतों के प्रति भी सद्भाव रखना चाहिए. इससे आगे बढ़कर कविवर ने कहा कि मानवता के नाते भी अछूतों को समान

---

1. स्वदेश-संगीत, पृ. 128-131

2. गांधी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव-डा० अरविन्द जोशी, पृ. 147

आदर देना चाहिए, वे सबके समान आदर के योग्य है --

" रक्खें सब निज गौरव गर्व,
मानव ही हैं मानव सर्व ।
देकर सबको आदर- दान,
दो निज मनुष्यत्व को मान ।
आखिर प्राणि मात्र हैं एक,
विश्रुत है यह आर्य- विवेक । " [1]

विश्व-वेदना
-------- गांधीजी की मान्यता के अनुसार गुप्तजी ने भी आदर्श राज्य के लिए राम-राज्य को महत्व दिया है. " विश्व-वेदना " में गुप्तजी रामराज्य की कल्पना करते हुए कहते हैं--

" आज के योग्य, एक अविभाज्य,
विश्व को मिले राम का राज्य । " [2]

कवि के मतानुसार विज्ञान की संहारक शक्तियों का उपयोग मानव-कल्याण के लिए करना चाहिए. कवि ने इस रचना में मानवता के उत्कर्ष की कामना भी की है. वे ईश्वर को प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि ईश्वर नीरस संसार में नवरस की धारा बहा दे जिससे सारी कलुषता नष्ट हो जाय और मानव समाज का कल्याण हो. गुप्तजी ने " विश्व-वेदना " में शांति- व्यवस्था और समाज के काल्पनिक आदर्शवाद का वर्णन किया है.

अजित
---- " अजित " में गुप्तजी हिंसक क्रांति-पद्धति एवं उसकी आतंकवादी कार्यनिष्ठा को अनुपयुक्त मानते हैं तथा सत्याग्रही मनोवृत्ति और अहिंसक कार्यपद्धति की उपयुक्तता सिद्ध करते हैं. " [3] सन 1942 के

1. हिन्दू, पृ. 147
2. विश्व-वेदना, पृ. 5
3. गांधी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव - डा० अरविंद जोशी, पृ. 148

के स्वतंत्रता-संग्राम की प्रतिक्रिया की पृष्ठभूमि के रुप में इस काव्य की रचना हुई है. गांधीजी के अहिंसक आन्दोलन की इसमें व्यंजना हुई है.

" भरा वस्तुतः लोभ-पाप तो उनके मन में,
किन्तु भोंकने चले शस्त्र हम केवल तन में ।
सबने किया प्रयास सदा तन के रोगों पर,
क्यों अब नये प्रयोग न हों मन के योगों पर ?
गांधीजी का यही यत्न, प्रभु करे सफल हो,
क्या बाहर के विघ्न, हमारे भीतर बल हो । " [1]

इस प्रकार गुप्तजी ने अजित के हृदय का परिवर्तन किया है.

" मत- परिवर्तन नहीं, - हृदय-परिवर्तन अब तो " [2]

गांधीजी मानते है कि अहिंसक साधनों से जनतंत्र को सफलता मिल सकती है. गुप्तजी ने भी इस काव्य में गांधी मत की ही अभिव्यक्ति की है.

भूमि-भाग

गांधीजी अहिंसक क्रान्ति में श्रद्धा रखते हैं. वैसेही, गुप्तजी ने भी भूदान-यज्ञ की अहिंसक क्रांति का समर्थन किया है. गांधीजी की भाँति गुप्तजी मानते हैं कि भूमि का वितरण होना चाहिए और भूमि पर सबको समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए.

राजा-प्रजा

गुप्तजी मानते है कि स्त्री-पुरुष दोनों को समान अधिकार मिलने चाहिए.

" आधे का अधिकार उचित ही उन्हें मिला है,
मानव का पशुभाव उन्हीं के हाथ हिला है ।
छोटों की माँ, और बड़ों की वे बेटी हैं,

1. अजित, पृ. 108-109
2. वही, पृ. 114

सवयस्कों की बहन, कहाँ किसकी बेटी हैं ' " [1]

इस काव्य में विश्व-बन्धुत्व को महत्व दिया गया है. कवि ने कहा है कि --

" किन्तु हमारा लक्ष्य एक अम्बर, भू, सागर,
एक नगर-सा बने विश्व , हम उसके नागर । " [2]

कवि ने लोकहित में ही व्यक्ति का हित देखा है और गांधीजी की सत्याग्रही तथा अहिंसक मानवता की अनासक्तिपरक व्याख्या करते हुए लोकतंत्र को यह मंत्र दिया है--

-" रहे रक्त या अश्रुपात के हम अभ्यासी,
पर अब अपनी भूमि पसीने की ही प्यासी । " [3]

अर्थात, इसमें " वर्तमान लोकतंत्र की राजनीति को नैतिक अधिष्ठान देने का सुप्रयास किया गया है. यह प्रचारात्मक कृति मात्र नहीं है. " [4] इस रचना में मनुष्यत्व को महत्व दिया गया है. कवि की मान्यता है कि मनुष्य अपने पुरुषार्थ से ही कठिन कार्य को सरल बना सकता है. इसमें कवि का लक्ष्य नारी- उत्कर्ष, पंचवर्षीय योजनाएँ एवं शिक्षा है.

वे परंपरा में विश्वास रखते हैं. फिरभी उन्होंने युगीन परिस्थितियों को महत्व दिया है. प्रजातंत्रीय शासन-प्रणाली का उल्लेख करते हुए कहते हैं-

" एक श्रमिक जो आज भूमि ही खन सकता है,
कल सुयोग्य हो वही राष्ट्रपति बन सकता है । " [5]

---

1. राजा-प्रजा, पृ. 34
2. वही, पृ. 46
3. वही, पृ. 42
4. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य- कमलाकांत पाठक, पृ.240
5. राजा- प्रजा, पृ. 27

उनका विचार है कि प्रजा के दोषों के कारण ही प्रजातंत्र में दोष आये हैं. वे आदर्श शासक की कल्पना करते हुए कहते हैं --

" होगा क्या अब भी एक न जन-रति भाजन,
फिर कहो भले ही उसे न अब तुम राजन । " [1]

गुप्तजी मताधिकार के भी विरोधी हैं. वे मानते हैं कि देश की सारी जनता मताधिकार के लिए योग्य नहीं है. इस पद्धति से तो मत का दुरुपयोग ही होता है.

इस सामयिक काव्य कृति में राष्ट्रीय आदर्शों का स्वरूप चित्रित हुआ है. गुप्तजी ने " राजा " खण्ड में लोकतंत्र की कमियों को प्रकट किया है. और " प्रजा " खण्ड में उन कमियों को निवारित करने का उपाय बताता है.

वैसेतो गुप्तजी का मोह राजतंत्र के प्रति रहा है. फिरभी वे युगीन परिस्थिति से कभी विरक्त रह नहीं पाये हैं. " राजतंत्र के ही प्रजातंत्रीकरण द्वारा उन्होंने युग धर्म एवं मज्जातन्तुगत संस्कारों की एक साथ रक्षा की है. " [2]

अभिव्यक्ति पक्ष
=-=-=-=-=-=

निसंदेह गुप्तजी एक युग निर्माता है. उनका अवतरण हिन्दी खड़ी बोली के इतिहास में युगान्तरकारी परिवर्तन का प्रतीक हैं.

भाषा

" भारत-भारती " की भाषा सरल, सुबोध एवं प्रवाहमयी है. यह काव्य लाक्षणिकता एवं प्रतीकात्मकता से हीन होते हुए भी उसमें पर्याप्त ओज, दीप्ति एवं प्रभावशीलता है. " वैतालिक " में कवि का कार्य शिल्प की दृष्टि से विशेष श्लाघनीय रहा है. वैसे देखा जाय तो रस की

----

1. राजा-प्रजा, पृ. 23
2. मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता-उमाकांत पृ. 477

दृष्टि से यह काव्य शुष्क है. लेकिन इसका शिल्प ही विशेष उल्लेखनीय है. " किसान " खण्डकाव्य की भाषा विकसित एवं व्यवस्थित है. किन्तु प्रौढ़ नहीं कही जा सकती. इसकी भाषा में कोई विशेष लालित्य नहीं है. कवि ने सर्वत्र अभिधा का ही प्रयोग किया है. " हिन्दू " संस्कृत-मिश्रित खड़ीबोली में लिखा गया है. संस्कृत के वाक्यों एवं वाक्यांशों का प्रयोग खटकता है. इसमें खड़ीबोली कहीं भी उभर नहीं पाई है. अर्थात्, खड़ी बोली का द्युतियुक्त एवं परिष्कृत रूप नहीं है. " विश्व-वेदना " की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है. स्थानीय एवं प्रांतीय शब्दों का प्रयोग होते हुए भी इसकी भाषा काफी परिमार्जित, मृदु एवं प्रसादगुणमयी है. " अजित " की भाषा परिमार्जित न होकर साधारण है. इसमें स्थानीय एवं असाहित्यिक शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है. इस काव्य में उर्दू एवं अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया गया है. " भूमिभाग " काव्य की भाषा काफी परिष्कृत एवं परिमार्जित है. " राजा-प्रजा " गुप्तजी की नवीन रचना है. इसकी भाषा प्रौढ़ एवं परिमार्जित है. इस चिन्तन-प्रधान काव्य में कवि का ध्यान शिल्प की ओर रहा ही नहीं है.

मुहावरें
=====

भारतवासियों ने अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए किया है. वे इसको अपने जीवन की महत्ता समझते हैं.

" पर-पीड़ितों का त्राण का जो दुख हम खोते नहीं । " [1]

इसके अलावा भी निम्न मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है.

" आश्चर्य है घट में उन्होंने सिन्धु को है भर दिया, " [2]
" क्या मर्द हैं, हम वाहवा ! मुख-नेत्र पीले पड़ गए . "
तन सूखकर काँटा हुआ, सब अंग ढीले पड़ गए " [3]

---

1. भारत-भारती, पृ. 58
2. वही, पृ. 38
3. वही, पृ. 150

भारतवासियों ने दूसरों से सम्पर्क ही नहीं रखा है. वे अपने घर में ही रहते हैं. उनमें कोई चेतना ही नहीं रही है. वे सुप्त बन गये हैं.
" बने कूप मण्डूक निरे " [1], " हृदय हृदय से लगने दो " [2]
" भूतल की सब भ्रान्ति मिटे और तुम्हारी श्रान्ति मिटे । " [3] आदि मुहावरों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है.

जब एक अनजान व्यक्ति ने किसान के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की तब उसको आश्चर्य हुआ.
" मैं चकित- सा रह गया " [4] " भूमि बहुत हैं कहीं ठौर पा जायेंगे " [5]
" गदगद होती हुई जकड़कर रहे गई " [6] " उन बातों से फटती यह छाती है . " [7] आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है.

भारतवासी कूप मण्डूक हो गए हैं उन्हें बाहर का कुछ भी ज्ञान नहीं है. " हम हो गये कूप-मण्डूक ! " [8]

कवि चाहता है कि बुराइयों का नाश हो जाय एवं पवित्रता की स्थापना हो जाय.

" पापों की लंका ढा जाय । " [9]

---

1. वैतालिक, पृ. 6
2. वही, पृ. 6
3. वही, पृ. 30
4. किसान, पृ. 32
5. वही, पृ. 29
6. वही, पृ. 29
7. वही, पृ. 40
8. हिन्दू, पृ. 39
9. वही, पृ. 100

" विश्व-वेदना " में कवि कहते हैं कि सब लोगों ने मर्यादा को त्याग दिया है. आज स्यार भी निर्भीक बन गये हैं. अर्थात समय आने पर छोटा निर्बल व्यक्ति भी वीर बन जाता है.

" मेट कर मर्यादा की लीक
स्यार भी सिंह हुए निर्भीक । " [1]

अजित अपनी मरी हुई माँ का स्मरण करते हुए कहता है कि वह खाट से नीचे गिरकर मर गई.

" वे चिर निद्रित हुई खाट से नीचे पड़ कर " [2] इसके अलावा " अजित " में " बिसा लायेंगे हम फिर भैया, " [3] " अपने दृग धोये " [4] आदि मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है. आज भूमि-हीनों को धूल भी नहीं मिलती है. उनको धूल का भी अभाव रहता है.

" दुर्लभ हुई धूल भी हमको । " [5]

" राजा-प्रजा " में कवि कहते हैं कि सब लोग जो कुछ चल रहा होता है उसको पसंद करते हैं.

" बहती गंगा में सभी हाथ धोते हैं, " [6] " देश-दासता मेटी " [7] आदि मुहावरों का भी प्रयोग किया है.

------------ ---------------

1. विश्व-वेदना, पृ. 11
2. अजित, पृ. 8
3. वही, पृ. 9
4. वही, पृ. 60
5. भूमि-भाग, पृ. 12
6. राजा-प्रजा, पृ. 10
7. वही, पृ. 17

लोकोक्तियाँ

उज्जैन की कीर्ति पृथ्वी के साथ नष्ट होगी. अर्थात जबतक पृथ्वी है तबतक उज्जैन का नाश नहीं होगा.

" मैं मिट गई पर कीर्ति मेरी जब मिटेगी जब मही . " [1]

इसके अलावा - " बारह बरस दिल्ली रहे पर भाड़ ही झोंका किये " [2] " गाना तथा रोना किसे आता नहीं " [3] आदि लोकोक्तियाँ हैं.

" वैतालिक " में कवि कहते हैं कि आज भारतवासी ऐसा जीवन पसंद करते हैं कि जिसको कोई छीन न ले. " इष्ट हमें हैं वह जीना-मरने से न जाय छीना । " [4]

जब तुम पर प्रभु की कृपा हुई है तब यह समझ लो कि तुम्हारे कष्ट का अंत हो गया है. और अब अच्छे दिन आये हैं.

" आज से ही दिन फिरे, दुख मिट गया " [5] हा हा खाना और सर्वदा आँसू पीना " [6] " हिन्दू " में कवि कहते हैं कि मतदाता को माली जैसा कार्य करना पड़ता है. अर्थात उसका काम मुश्किल है.

" चुन लें काँटों में भी फूल " [7]

शिक्षित बनें अकिंचन बाल,

निकलें वे गुदड़ी के लाल । " [8]

---

1. भारत-भारती, पृ. 78
2. वही, पृ. 124
3. वही, पृ. 53
4. वैतालिक, पृ. 26
5. किसान, पृ. 31
6. वही, पृ. 9
7. हिन्दू, पृ. 124
8. वही, पृ. 159

आज, नर-पशु उद्यान को नष्ट करने जा रहे हैं. वे शून्य में पताका ~~छोड़~~ उड़ा रहे हैं. अर्थात, जहाँ कोई नहीं है वहाँ पताका उड़ा रहे हैं. " शून्य में उड़ी पताका है. " [1], उजाड़े जाता है उद्यान " [2]

" अजित " में साम्य राज्य ही इष्ट, नहीं साम्राज्य हमें है,
सच्चा वही स्वराज्य और सब त्याज्य हमें है । " [3]

आदि लोकोक्तियाँ का भी प्रयोग मिलता है.

" भूमि-भाग " में कवि कहते हैं कि कवि यह नहीं जानते हैं कि वे कैसे जीवन जी रहे हैं।

" खाते तरस जानते यदि तुम, हम चुप अश्रु पिया करते हैं, " [4]
" विवश वृथा हम नर संख्या की वानर वृद्धि किया करते हैं । " [5]
" अगति मृत्यु के ही आँगन में अपना ठौर ठिया करते हैं । " [6]

" राजा-प्रजा " में प्रजा कहती है कि राजा काल का कारण है.

" राजा कालस्य कारणम् " [7] " कल मरता हो सो आज मरे " [8] " निज से वे पर ही भले " [9] आदि लोकोक्तियाँ भी प्रयुक्त हुई हैं.

---

1. विश्व-वेदना, पृ. 46
2. वही, पृ. 46
3. अजित, पृ. 91
4. भूमि-भाग, पृ. 14
5. वही, पृ. 15
6. वही, पृ.15
7. राजा-प्रजा, पृ. 27
8. वही, पृ. 11
9. वही , पृ. 18

सूक्तियाँ

आत्मा शाश्वत है, उसका नाश नहीं होता है। नाश तो देह का ही होता है.

" आत्मा अमर है, देह नश्वर " [1] इसके अलावा कवि ने
" साहब ! हमें यूरोपियन हिस्ट्री न अब दिखलाइए,
बेलून की रचना हमें करके कृपा सिखलाइए । " [2]
" है निशि-दिवा-सी घूमती सर्वत्र विपदा- सम्पदा " [3] आदि सूक्तियाँ भी प्रयुक्त हुई है. " वैतालिक " में कवि ने शुभ कामना व्यक्त की है.

" ऊँची पुनः पताका हो,
सत्य धर्म का साका हो । " [4]

माता की मृत्यु के बाद कल्लू कहता है कि जब वह जीवित थी तब उसे कोई सुख नहीं मिला. लेकिन, अब पुत्र को माँ की मृत्यु से खेद हो रहा है.

" जननी ! जननी ! स्नेहमयी जननी हहा ! " [5] इसके अलावा यहाँ " कुछ भी हो संसार आप चलता नहीं,
मर जाओ पर प्रकृति-नियम टलता नहीं । " [6] जैसी सूक्तियाँ भी प्रयुक्त हुई है.

प्राचीन भारतवासियों की दृष्टि उदार थी. उनके लिए सारी सृष्टि ब्रह्ममय है. " ब्रह्ममयी है सारी सृष्टि " [7] इसके अलावा कवि ने

---

1. भारत-भारती, पृ. 23
2. वही, पृ. 125
3. वही, पृ. 7
4. वैतालिक, पृ. 30
5. किसान, पृ. 23
6. वही, पृ. 24
7. हिन्दू, पृ. 26

" वाराणसी मेदिनी सर्व " [1] आदि सूक्तियों का भी यथास्थान प्रयोग किया है. " विश्व-वेदना " में उचित है जहाँ मिलन का हर्ष, वहीं भय-संशय-मय संघर्ष " [2] जैसी सूक्तियाँ हैं. " भूमि-भाग " में कवि कहते हैं कि जो सबकी जननी है वही भूमि की पुत्री सीता है.

" वह भी तेरी सुता बनी जो सबकी जननी सीता " [3]

" राजा-प्रजा " जब प्रजातंत्र आ गया है एवं प्रजा ने शासनसूत्र सँभाल लिया है. तब कवि कहते हैं कि -

" सर्वोदय के सुप्रभात में जागो, जागो ! " [4]

संवाद-योजना
==========

" भारत-भारती ", " वैतालिक ", " हिन्दू ", " विश्व-वेदना " " भूमि-भाग ", " राजा-प्रजा " आदि रचनाओं में संवादों का नितान्त अभाव रहा है. " भारत-भारजी ", " वैतालिक ", " हिन्दू " आदि उद्बोधनात्मक काव्य है. " भूमि-भाग " प्रगीतात्मक रचना है. और " राजा-प्रजा " प्रबन्धात्मक मुक्तक काव्य होने के कारण इसमें संवादों का गुप्तजी ने सहारा नहीं लिया है.

किसान -

यहाँ कवि ने कृषक-जीवन का चित्रण किया है. इसके संवाद पात्रानुकूल है.

" नई बधू के लिए दीन जब पा न सका उपहार -
तब क्या करता, लूट-मार का करना पड़ा विचार ।

1. हिन्दू, पृ. 26
2. विश्व-वेदना, पृ. 9
3. भूमि-भाग, पृ. 5
4. राजा-प्रजा, पृ. 48

पर कुछ बिगड़ा नहीं अभी तक करले यदि स्वीकार,
प्राज्ञ पुलिस का यही तर्क था, कौन करे प्रतिकार,
कहा पिता ने-" वह लड़का है, यह कैसा अन्धेर ? "
किन्तु वहाँ उत्तर में लगती थी- क्या देर ?
"ऐसा लड़का है कि अकेले भी दो दो पर घात,
लड़े तेदुंओं से जो उसको है यह कितनी बात ?
" अच्छा,यही सही, तो उसका कर दो तुम भगवान ।" [1]

" अजित " के संवाद भी प्रभावशाली है--

" कटे ओठ का रक्त घन्नू ने उस पर थूका,
अब तेरा शव उसी खेत का बने बिजूका ! "
यह कह वह पिस्तौल शत्रु पर ताने ज्यों ही,
" प्रथम मुझे " कह बहू बीच में दौड़ी त्यों ही ।
धाड़ मार फिर घूम गिरी पैरों पर मेरे-
उन्हें बचाओ, उन्हें बचाओ ईश्वर मेरे । " [2]

रस योजना

" भारत-भारती " में करुण रस की व्यंजना इस प्रकार हुई है.

" नारी-जनों की दुर्दशा हमसे कही जाती नहीं,
लज्जा बचाने को अहो ! जो वस्त्र भी पाती नहीं,
जननी पड़ी है और शिशु उसके हृदय पर मुख धरे,
देखा गया है, किन्तु वे माँ-पुत्र दोनों हैं मरे । " [3]

वैतालिक-

डा० उमाकान्त ने लिखा है कि " इसमें बौद्धिक आख्यान है,

1. किसान, पृ. 16
2. अजित, पृ. 77
3. भारत-भारती, पृ. 95

हृदय-प्रसूत भावाभिव्यंजना नहीं. इसीलिए इसमें रस का प्रायः अभाव है. "[1]

" किसान " में किसान-वर्ग की दारुण दशा का वर्णन किया गया है. इस सम्पूर्ण काव्य में करुण रस की प्रधानता है.

" कुलवन्ती ! तू भी छोड़ गई क्या मुझको ?
क्यों मेरा रहना यहाँ इष्ट था तुझको ?
रखकर तेरी सौगन्ध रहूँगा अब मैं,
मरणाधिक दुख आमरण सहूँगा अब मैं ।।
तू जहाँ गई भय नहीं वहाँ पर कोई,
पर मैंने अपनी आज हृदय-निधि खोई ।
मरने का अवसर खोज रहा हूँ अब मैं,
यह तो कह जाती कि पा सकूँगा कब मैं । "[2]

" यहीं सोच है दे न सकी मैं अंक-मयंक तुम्हारा,
रहा पेट ही में वह मेरे, चला नहीं कुछ चारा ।
लो बस अब मैं चली सदा को मन में मत घबराना,
मेरे फूल जा सको तो, भारत को ले जाना । "
हाय ! आज भी उन बातों से फटती यह छाती है,
कुलवन्ती ! कुलवन्ती मुझको छोड़ कहाँ जाती है ?[3]

" हिन्दू " में रस का अभाव है फिरभी भारतवासियों के पतन तथा विधवा आदि के वर्णन में करुण का स्पर्श हुआ है. उसमें आवेग का अभाव है.

" खो बैठे अपना घर-वार,
लुटे हाय ! हम वारम्बार ।
आज हमारा है यह ज्ञान,
हम हैं दीन, दास, कंगाल !

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता, उमाकान्त, पृ. 21
2. किसान, पृ. 41
3. वही, पृ. 40

देख मूर्तियाँ भी न निरस्त्र
जिनकी, हुए वही निःशस्त्र ।
रक्षा पाते जिनसे रक्ष्य
-वहीं हिंस्त्र पशुओं के भक्ष्य ।
जिनसे घर बैठे सब लोक
पाता रहा अमृत अस्ताके,
उनके बच्चों को हा लाज,
हुआ दूध भी दुर्लभ आज ? " 1

" विश्व-वेदना " के आरंभ से अंत तक करुण रस की ही प्रधानता रही है. एकाध स्थल पर बीभत्स का भी वर्णन हुआ है.

करुण -

" चुने जाते थे कल तक कोट,
आज वे गये धूल में लोट ।
खाइयाँ खोदो अब, लो ओट,
बचाओगे पर कब तक चोट ?
नहीं वह अन्ध मृत्यु अब मूढ़,
मिला उसको विज्ञान निगूढ़ । " 2

बीभत्स रस

" कहीं सिर तो उर कहीं फटे,
कहीं कर तो पद कहीं कटे ।
मरण के आगे जो न हटे,
वही ये कैसे आज लटे ।
यही लूले, लँगड़े, अन्धे,
करेंगे जगती के धन्धे ? " 3

---

1. हिन्दू, पृ. 62
2. विश्व-वेदना, पृ. 31
3. वही, पृ. 37

" अजित " में रस का परिपाक कम हुआ है. किन्तु कुछ स्थलों पर वीर, करुण, विप्रलंभ एवं वात्सल्य के उदाहरण मिल जाते हैं.

विप्रलंभ श्रृंगार

" मेरे आगे आज यहाँ वह दुखिया आई।
सब कुछ कहती हुई, विना मुँह से कुछ बोले,
दीखी मानो प्रथम यहीं वह घूँघट खोले !
फिरभी मुँह पर मलिन आवरण मैंने पाया,
उगा इधर से चन्द्र उधर से कुहरा छाया ! " [1]

करुण -

" मैं हट आया किन्तु न लौटे उभय अभागे,
मधु में माहुर घूँट गये जगती के आगे।
" गया हमारा धनी ! " बहुत से बन्दी रोये,
कह मैंने भी - हाय दीन ! अपने दृग धोये। " [2]

" भूमि-भाग " के एक गीत में वात्सल्य का चित्रण निम्न प्रकार से हुआ है.

" हा ! हमारी भूमिमाता आज किसके घर घिरी है।
अम्ब, तेरे बाल- बच्चे क्या सदा हम बिलख रोवें,
स्नेहमयि, क्या आँसुओं से हम हृदय के घाव धोवें,
रक्त से भी सींच तुझको क्यों न जीतें क्यों न बोवें,
तू न हो सर्वसहा तो दूर सारे दुःख होवें,
किन्तु क्यों शुभ दृष्टि तेरी हम अभागों से फिरी है,
हा ! हमारी भूमिमाता आज किसके घर घिरी है। " [3]

" राजा-प्रजा " में रस की दृष्टि से कोई उल्लेखनीय बात नहीं मिलती है.

---

1. अजित, पृ. 32
2. वही, पृ. 60
3. भूमि-भाग, पृ. 27

बिम्ब विधान

यहाँ मस्तिष्क को ज्ञान एवं विज्ञान का भण्डार कहकर एक सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत किया है –

" मस्तिष्क उनका ज्ञान का, विज्ञान का भाण्डार है,
है सूक्ष्म बुद्धि-विचार उनका, विपुल-बल-विस्तार है,
नव-नव कलाओं का कभी लोकार्थ आविष्कार है,
अध्यात्म तत्वों का कभी उद्गार और प्रचार है ।। " [1]

यहाँ मुक्तात्मा और परमात्मा का बिम्ब द्रष्टव्य है –

" निश्चय तुम मुक्तात्मा हो,
परमात्मा युक्तात्मा हो ।
अजरामर, अविनाशी हो,
तेजोराशि- विकाशी हो ।। " [2]

निम्न पद्य में उपमा अलंकार तो हैं ही इसके साथ-2 प्रातः काल एवं सन्ध्या, मोती से हिमकण और तारागण का सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत हुआ है.

" पत्तों पर मोती हिमकण से प्रातःकाल चमकते थे,
सन्ध्या को ऊपर तारागण कैसे दिव्य दमकते थे । " [3]

निम्न छन्द भी एक प्रभावशाली बिम्ब का उदाहरण है-

" ईसा महापुरुष हैं मान्य,
क्षमामूर्ति, व्रतवीर वदान्य ।
धर्म विषय में वही सुपात्र,
हैं इस भारत के ही छात्र । " [4]

---

1. भारत-भारती, पृ. 64
2. वैतालिक, पृ. 7
3. किसान, पृ. 11
4. हिन्दू, पृ. 128

यहाँ गगन, जलधि का एवं विमान जलयान का बिम्ब द्रष्टव्य है :

" गगन में गति-गृह बने विमान,
जलधि में दुर्ग सदृश जलयान । " [1]

यहाँ कृषक का वर्णन करते हुए कवि ने एक प्रभावशाली बिम्ब प्रस्तुत किया है --

" विकृत वसन, हतअशन, बुझे मन, मुरझे तन हैं । " [2]

निम्न छन्द में कवि ने श्रमजीवी का एक बिम्ब प्रस्तुत किया है--

" हम रक्त चूसते नहीं कहीं खाते जब स्वेद बहाते हैं,
निज रोम रोम भर अपने ही श्रमजल से नित्य नहाते हैं,
संतोष मान सहते हैं हम, दिन जो भी हमें सहाते हैं,
हम कहाँ अदत्त मूल्यभोगी श्रमजीवी जहाँ कहाते हैं " [3]

जब बन्धन की बेड़ियाँ कट गई हैं तब वे गति को प्राप्त करना चाहते हैं-

" कटी बेड़ियाँ, खुले पैर गति भी पा लेंगे,
पंकिल-मानस, नलिन-मूर्ति-मति भी पा लेंगे । " [4]

अलंकार विधान

उपमा- " गौतम वसिष्ठ समान मुनिवर ज्ञान दायक थे यहाँ,
मनु याज्ञवल्क्य-समान सप्तम विधि-विधायक थे यहाँ,
वाल्मीकि- वेदव्यास से गुण-गान-नायक थे यहाँ,
पृथु, पुरु, भरत, रघु- से अलौकिक लोक-नायक थे यहाँ । " [5]

---

1. विश्व-वेदना, पृ. 6
2. अजित, पृ. 28
3. भूमि-भाग, पृ. 22
4. राजा-प्रजा, पृ. 31
5. भारत-भारती, पृ. 14

अपह्नुति
" वे झाड़ मर्मर-मिस पवन में भर रहे ये शब्द हैं-
जो थे यहाँ उनको हुए बीते अनेकों अब्द हैं । " [1]

मानवीकरण- यहाँ कवि ने उषाकालीन नभ का मानवीकरण किया है.

" वह ललाट सिन्दूर अहा !
देखो, कैसा दमक रहा ।
नभस्थली सौभाग्यवती,
देख रही है बाट सती ।।
यह सोने का थाल लिये,
उज्ज्वल उन्नत भाल किये । " [2]

उत्प्रेक्षा
" वर्षा में ही हुआ शरद का वास था !
करता मानो धवल चन्द्र उपहास था " [3]

सहोक्ति
" दल-बल-सहित अमीन गया सानन्द ही,
मैं कुलवन्ती- सहित रहा निस्पन्द ही । " [4]

श्लेष
" किन्तु बन्धुगण, न हो सशंक,
सूखेंगे आखिर सब पंक ।
सिद्ध हो चुका है यह मर्म -
जय है वहीं जहाँ है धर्म । " [5]

" आप निम्नगामी है आप,
पर उसको भी तपः प्रताप

---

1. भारत-भारती, पृ. 92
2. वैतालिक, पृ. 9
3. किसान, पृ. 25
4. वही, पृ. 27
5. हिन्दू, पृ. 103

कर देता है उच्च उदार,
और नहीं रहता फिर क्षार । " [1]

अन्त्यानुप्रास
" नित्य ही जिनको भोजन-कष्ट,
न हों वे कब तक शीलभ्रष्ट ?
निहत्थे हैं सो भीरु स्पष्ट,
भेड़ियों के भी हाथों नष्ट । " [2]

विनोक्ति
" भक्ति के विना कौन गलता ?
स्वेद ही मोती बन ढलता । " [3]

यमक
" बच्चे भी थे साथ बहुत नंगे अधनंगे,
अरे, कहाँ से टूट पड़े इतने भुखमंगे ? " [4]

निदर्शना
" जीते हुए मौन मरने का,
संयम-नियम चल नहीं सकता ।
मनु के वंशजों में मत्स्यों का,
निर्दय न्याय चल नहीं सकता । " [5]

अनुप्रास
" जो सुन्दर था, रहा अभी का सभी तुम्हारा,
कुत्सित था सो मिला हमें सारा का सारा । " [6]

---

1. हिन्दू, पृ. 137
2. विश्व-वेदना, पृ. 20
3. वही, पृ. 49
4. अजित, पृ. 28
5. भूमि-भाग, पृ. 21
6. राजा-प्रजा, पृ. 27

छन्द विधान

" भारत-भारती " हरिगीतिका छन्द में लिखा गया है. इस छंद में 28 मात्राएँ रहती हैं और 16-12 मात्रा पर यति पड़ती है. इसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं, एवं छब्बीसवीं मात्रा लघु रहती है.

" मानस -भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती-
भगवान भारत वर्ष में गूँजे हमारी भारती ।
हो भद्रभावोद्भाविनी वह भारती हे भगवते ।
सीतापते ! सीतापते ! गीतामते ! गीतामते ।। "[1]

" वैतालिक हाकलि छन्द में लिखी गई रचना है. इसमें 14 मात्राओं का पाद होता है. इसमें चार-चार मात्रा का चौकल बनकर पूरे तीन चौकल होते हैं और उनके एक आगे एक गुरु अक्षर रहता है.

" यह तन सोने को न मिला,
जीवन खोने को न मिला ।
आयु गँवाना उचित नहीं,
रहना शुभ संकुचित नहीं ।। "[2]

" किसान " खण्डकाव्य में कवि ने चन्द्रायण, सरसी, चववैया , रोला, गीतिका आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है.

चन्द्रायण छन्द 21 मात्राओं का छन्द है. इसकी 11 वीं मात्रा पर यति पड़ती है. इसकी मात्रा जगणान्त होती है और अन्त में । ऽ रहता है.

" यम के रहते हुए हाय ! ऐसी व्यथा ?
पूरी हो क्या यहीं अधूरी यह कथा ?
दयानिधे, क्यों दया तुम्हारी चुक गई ?
और अधिक क्या कहूँ, गिरा भी रुक गई ? " [3]

1. भारत-भारती, पृ. 7
2. वैतालिक, पृ. 8
3. किसान, पृ. 30

गीतिका 26 मात्राओं का छन्द है. इसकी 14, 12 मात्रा पर यति पड़ती है. इस छन्द की तीसरी, दसवीं, सत्रहवीं और चौबीसवीं मात्रा लघु रहती है.

" अन्नपूर्णारुपिणी माँ ! तू हमें है छोड़ती,
हाय ! माँ होकर सुतों से तू स्वयं मुँह मोड़ती ।
तो विदा दे अब हमें, तू भोगती रह सुख सभी,
हम सदा तेरे, न चाहे तू हमारी हो कभी । " [1]

कवि ने " हिन्दू " में चौपाई छन्द का प्रयोग किया है. चौपाई छन्द में चौपाई की भाँति सममात्रिक प्रवाह होता है. चौपाई की अंतिम गुरु मात्रा से लघु करने से बनता है. आचार्य भानुजी ने इसके अंत में ऽ। - रखने का नियम माना है और अन्य नाम जयकारी बताया है. इस छन्द की 15 मात्रा रहती है.

" शाला और सभाएँ खोल,
तथा कथा-किर्तन अनमोल,
कर करके तुम वारंवार,
हिन्दूपन का करो प्रचार । " [2]

" विश्व-वेदना " काव्य सोलह-सोलह और पन्द्रह-पन्द्रह मात्राओं के श्रृंगार तथा जयकारी छन्द में लिखा गया है.

" छोड़कर वह त्रेता युग दूर,
आज हम बढ़ आये भयपूर ।
साथ ही वह कर्बुरता क्रूर,
प्रगति के मद में है यह चूर ।
आज के योग्य, एक अविभाज्य,
विश्व को मिले, राम का राज्य । " [3]

---

1. किसान, पृ.33
2. हिन्दू, पृ. 105
3. विश्व-वेदना, पृ. 5

" अजित " खण्डकाव्य रोला छन्द में लिखा गया है. इसमें 11, 13 मात्रा पर यति पड़ती है. इसके चरण के अन्त में दो गुरु रहते हैं. पर अंतमें चार लघु या भगण (ऽ।।) गुरु-लघु-लघु, या सगण (।।ऽ) लघु-लघु- गुरु भी मिलता है-

" राम, हमारे राम, तुम्हारे बने रहें हम,
जीवन के संघर्ष हर्ष के संग सहें हम !
प्रभो, भक्ति दो हमें हाय ! किस भाँति कहें हम ?
बँधे गुणों से रहे, कहीं भी क्यों न बहें हम ? " 1

" भूमि-भाग " प्रगीतात्मक रचना है. इसमें त्रिभंगी, सार, विकर्ण आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है.

" विकर्ण " के आदि और अंत के दो चरण तारक है. अर्थात इसमें 12 मात्राएँ रहती हैं. बीचके चार चरण चौपाई के रहते हैं. अर्थात, अन्त्य-क्रम क, क, ख, ख, ग, ग, क, क हैं

" सुनते हो, हे स्वामी ?
आये सन्त विनोबा नामी ।
उत्सुक हूँ यदि अनुमति पाऊँ,
तो मैं भी दर्शन कर आऊँ,
नहीं चाहते चाँदी-सोना,
दो, मिट्टी ही भेंट चढ़ाऊँ,
कठिन भूमि का भार लिये वे अनुदिन मृदु पदगामी ।
सुनते हो, हे स्वामी ? " 2

" राजा-प्रजा " में राधिका छन्द तथा रोला आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है.

---

1. अजित, पृ. 7
2. भूमि-भाग, पृ. 25

रोला छन्द के प्रत्येक पाद में 24 मात्राएँ होती है. इसकी 11 वीं और 13 वीं मात्रा पर यति पड़ती है. अंतमें दो गुरु या दो लघु रहते हैं.

" बार बार हो रही सुघोषित नीति हमारी,
नहीं किसी से वैर सभी से प्रीति हमारी ।
सर्व सुखी हों यही सदा की रीति हमारी,
खोले सबके मित्र-चक्षु श्रुति-गीति हमारी । " [1]

संक्षेप में, यही कहा जा सकता है कि गुप्तजी एक सिद्धहस्त कलाकार है. उनका भाव पक्ष ही नहीं बल्कि शिल्प-पक्ष भी उतना ही प्रबल है.

---

1. राजा-प्रजा, पृ. 47